खुतबात ए फकीर /२

उर्दु जिल्द ८ से इन मज़मुनो का लिप्यांतरण किया गया है.

पीर ज़ुल्फीकार नक्शबंदी दा.ब.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

1. अच्छे अखलाक

दरखत अपने फल से पहचाना जाता है इसी तरह इन्सान अपने अखलाक से पहचाना जाता है, जिस दरखत का फल अच्छा और मीठा होता है, लोग उस दरखत की हिफाज़त भी करते है, इसी तरह जिस इन्सान के अखलाक अच्छे हो जिसके पास बेठे तो वो फायदा पोहचाये और मुसीबत मे लोगो के काम आये, ऐसे बन्दे को दुसरे लोग भी पसन्द करते है.

कुरान मे इरशाद है और जो इन्सानो को नफा पहुचाता है अल्लाह उसे ज़मीन मे जमा देते है (सुरे रअद/१७).

दीने इस्लाम दीने फितरत है इसलिये इसमे अच्छे अखलाक पर बहोत जोर दिया गया है आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फरमाया है के ईमान लाने के बाद सब से अफज़ल अमल, अच्छे अखलाक है, और आप صلی اللہ علیہ وسلم ये दुआ भी

मांगा करते थे, या अल्लाह जिस तरह तुने मेरी सुरत अच्छी बनायी है तु मेरे अखलाक को भी अच्छा करदे. अच्छे अखलाक ईमान के कमाल की निशानी है इसलिये आप ﷺ ने फरमाया मोमीनो मे सबसे कामिल ईमान वाला वो है जो अखलाक के एतेबर से सबसे अच्छा हो.

अखलाक के तीन दरज़ात

पहला दरज़ा जो यहुदीयो को मिला उसे अख्लाके हमीदा कहते है, वो अखलाक ये थे कोई तुम्हे जितनी तकलीफ पोहचाये तुम भी उतनी ही तकलीफ पोहचा सकते हो, उस्से ज़्यादा नही पोहचा सकते.

दुसरा दरज़ा जो इसाईयो को मिला उसे अखलाके करीमाना कहते है, वो अखलाक ये थे कोई तुम को तकलीफ पोहचाये, तो तुम उसको माफ कर दो, अगर कोई तुम्हारे गाल पर एक थप्पड मारे तो तुम अपना दुसरा गाल उन्के सामने पेश कर दो, वो इस अखलाक को बडा मरतबा समझते है.

तीसरा दरज़ा जो उम्मते मुस्लिमा को मिला है, जिसे अखलाके अज़ीमा कहते है, अखलाके अज़ीमा येहे की ए मेहबुब उन्हें माफ कर दीज्ये, उन्के लिये इस्तेगफर कीज्ये, उन्को अपने मशवरे मे भी शामिल फरमा लिज्ये. (आले इमरान/१५९)

अल्लाह ने ईमान वालो की आदत कुरान मे बयान फरमाई, और वो गुस्से को पी जाने वाले होते है और वो इन्सानो को माफ कर देने वाले होते है, और अल्लाह ऐसे नेक इन्सान से मोहब्बत फरमाते है (आले इमरान/१३४)

हमे दुसरो को शिर्फ माफ ही नही करना है बल्के उन्की गलतीयो के बावज़ूद उन्को अपने करीब करना है अल्लाह का इरशाद है जब तुम बुराई का बदला अच्छाई के साथ दोगे तो नतीज़ा ये निकलेगा के तुम्हारे और जिसके दरमियान दुश्मनी है, वो बंदा फिर तुम्हारा जिगरी दोस्त बन जायेगा (सुरे हामीम सजदा/३४)

अल्लाह हमे भी अच्छे अखलाक नसीब फरमाये, आमीन.

2. मोमिन किसे कहते

ईमान वालो को चाहिये के उन्की सोच हमेशा पॉज़ेटिव होनी चाहिये, नेगेटीव सोच से बचे, दुसरो की बुराई से आंख और कान आडे कर दिया करे, और अपनी तरफ से इनके साथ अच्छाई का मामला करे, इसको खैरख्वाही कहते है, ऐसा बंदा अल्लाह को बडा पसन्द है जो दुसरो की खैरख्वाही करता है.

आप ﷺ ने फरमाया के दीन पुरा का पुरा खैरख्वाही है, जहा दीन होगा वहा पूरी खैरख्वाही और भलाई होगी,

और जहा खैरख्वाही और भलाई मिले तो समझ लेना के वहा दीन मौजुद है, और जहा आप को एक मुसलमान दुसरे मुसलमान का बुरा चाहने वाला नजर आये तो समझ लेना चाहिये के दीन उस्के दरमियान से नीकल चुका है.

मोमीन का तो काम है के सारी दुनिया की खैरख्वाही करे हर एक को इससे फायदा पोहचे, किसी को तकलीफ पोहचाने के बजाये उन्के दुख दर्द मे काम आये, उसकी ज़िन्दगी गुज़ारने का अन्दाज़ ऐसा हो के सब को यकीन हो के ये अच्छे अखलाक वाला इन्सान है, इससे हमे तकलीफ नही पोहोच सकती.

एक मरतबा कुछ लोग बेठे हुवे थे तभी वहा आप ﷺ तशरीफ लाये और फरमाया क्या मे तुम्हे ये ना बताउ के तुम्मे से अच्छा कौन है और बुरा कौन है? सब खामोश रहे, आप ने ये सवाल तीन मरतबा दोहराया, एक शखस ने अर्ज़ किया, या रसुलुल्लाह ﷺ ज़रूर बताये, आप ﷺ ने फरमाया तुम्मे से बेहतरीन वो है जिस्से लोग भलाई की उम्मीद रखते हो और बुराई से इतमीनान रखते हो और बदतरीन वो शखस है जिस्से लोग भलाई की उम्मीद ना रखते हो और उसकी बुराई से खौफ खाते हो.

आप ﷺ ने किस जामे अंदाज मे ये बात फरमायी के

लोगो को तकलीफ ना पोहचाओ, बल्के फरमाया के अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीका ऐसा रखो के लोगो के दिल मे ये बात बेठ जाये के सारी दुनिया से हमे नुकसान हो सकता है, लेकिन इस बन्दे से हमे नुकसान नही पोहोच सकता.

एक मरतबा आप ﷺ तवाफ कर रहे थे, आपने काबा की तरफ देखा और फरमाया ए काबा राज़ी अल्लाह ने तुज़े बडी शान अता फरमाई है, लेकिन मोमिन का एहतेराम अल्लाह के नज़दीक तेरे एहतेराम से ज़्यादा है, गोर कीज्य हम काबा की तरफ तो मुंह करके सजदे करे, और उस्के गीलाफ को पकड कर दुआए भी मांगे, और बोसे भी दे, लेकिन मोमीन से नफरत करे, उसे तकलीफ पोहचाये, और उस्के लिये बुरा चाहते फिरे, तो फिर हमारा ईमान केसा होगा? (अबु दावुद शरीफ)

मोमीन अपने या पराये सब का खैरखवाह होता है.

3. सिलारेहमी

मखलुक अल्लाह का परिवार है, इसलीये फरमाया, तुम रहम खावो जो ज़मीन पर है, तो तुम पर वो रहम करेगा जो परवरदिगार आसमान मे है.

ईमान वालो से मोहब्बत इसलिये होनी चाहिये के कुरान मे अल्लाह का इरशाद है सुरे हुज़ूरात/१० “मोमीन

एक दुसरे का भाई है” याद रखना दुनिया और आखिरत मे भाई ही काम आते है.

आपﷺ ने फरमाया कसम है उस जात की जिसके कबज़े मे मेरी जान है कोई शखस उस वकत तक मोमीन नही हो सकता जब तक वो अपने मोमीन भाई के लिये वो ही पसन्द नही करता जो अपने लिये पसन्द करता है.

इस्लाम हमे सिलारहमी का हुकम देता है, अगर हमसे कोई बुराई करे उस्के साथ भी अच्छा सुलुक करना है, और जो तुज़ से तोडे तु उस्से जोड, जो तुज़ पर ज़ुलम करे तु उसे माफ कर दे.

एक रिवायत मे आया के अल्लाह शबे कदर मे बडे से बडे मुज़रीमो को माफ कर देते है, लेकिन कूछ बन्दे ऐसे है, जिन्को अल्लाह शबे कदर मे भी माफ नही करते, उनमे से एक वो जो रिश्तेनाते तोडने वाला हो.

आपﷺ ने फरमाया के नौजवान अपने दोस्त के साथ रेह कर खुश होगा और अपने मां बाप के साथ रेह कर तंगी मेहसूस करेगा.

वो नौजवान अपनी कामयाबी इसी मे समझते है के घर की पाबंदीयो से हमारी जान छूटे और दोस्तो मे ज़िन्दगी गुज़ारे, औलाद की ज़िन्दगी इसी मे है के, मां बाप के साथ मिल कर रहे, क्युंके आपﷺ ने फरमाया

के तुम्हारे लिये बरकत बडो के साथ मिलकर रेहने मे है.

4. इन्सानियत और हेवानियत

दीने इस्लाम ने अच्छे अखलाक को बडा दरज़ा दिया है, जिस इन्सान मे मोहब्बत, प्यार हो, सीना कीने से भरा हुवा ना हो, दिल दुश्मनीयो से भरा हुवा ना हो, नफरते ना बाटे, बल्के प्यार, मोहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारे इसीको इन्सानियत कहते है.

हम अपनी ज़िन्दगी की जांच करे के हम किन अखलाक के साथ ज़िन्दगी गुज़ार रहे है, तो मालूम होगा हम तो हर बन्दे को कहते है के हम इट का जवाब पथ्थर से देंगे, हम तो छोटी छोटी बातो पर बदला लेने के आदी बन जाते है, सीना कीनो से भरा होता है और फिर सोचते है के इबादतो मे मजा और दुआए कबुल क्यो नही होती, जब दिल मे कीना हो तो सुकुन केसे आयेगा?

आपﷺ ने फरमाया जो शखस दुसरो को जल्दी माफ करने वाला होगा, अल्लाह कयामत के दिन उसको जल्दी माफ फरमा देंगे.

और रसुलुल्लाहﷺ ने फरमाया तुम अल्लाह के बंदो को अल्लाह के लिये माफ करते रहे, अल्लाह कयामत के दिन हम पर मेहेरबानी फरमा देंगे.

इन्सान हेवानो और जानवरो से भी बदतर- जो इन्सान

दुसरो के दिल को दुखी करे, और उन्के लिये जान का जोखम और मुसीबत बने, वो हेवान है, बल्के हेवानो से भी बदतर है, अल्लाह फरमाते है “ये तो जानवर है, बल्के जानवरो से भी बदतर है वो गफलत मे पडने वाले है” (सुरे अअराफ/१७९)

जानवर तीन किस्म के होते है

पहली किस्म है फायदा देने वाले और तकलीफ ना देने वाले जानवर जेसे गाय, भेंस, बकरी वगेरा.

दुसरी किस्म है जंगली जानवर जेसे शेर और भेडिया वगेरा.

तीसरी किस्म है मुज़ी जानवर जो शिर्फ दुसरो को नुकसान पोहचाने के पीछे पडे रेहती है साँप, बिच्छु वगेरा.

जब इन्सान हेवान बन जाता है तो ये सब से बदतरीन जानवरो के जेसा बन जाता है, जिसमे उसका कोई फायदा नही होता, मगर दुसरो का दिल दुखाता है. अल्लाह हमे इन बातो पर अमल करने की और इन सब से बचने की तोफीक नसीब फरमाये आमीन.